428
मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 5.00
बूढ़ा जादूगर और
पारस पत्थर
मनोज
कॉमिक्स
Vijay Kadam
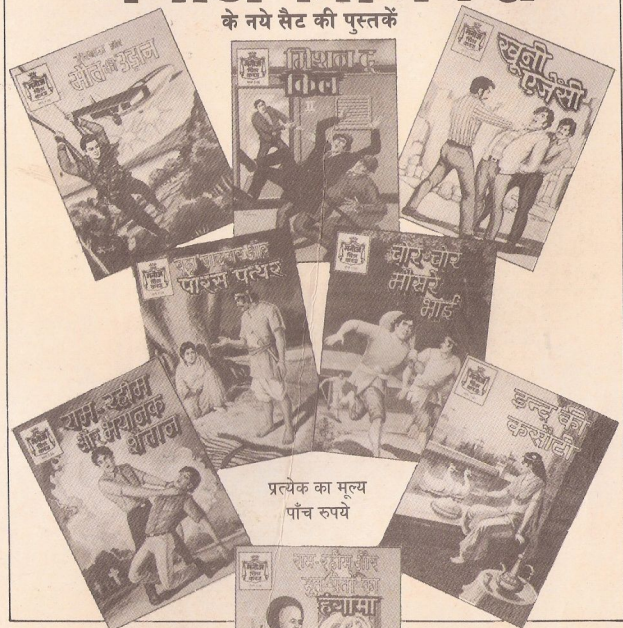
प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स, 1584, दरीबा कलाँ, दिल्ली - 110 006
वितरक : राजा सेल्स कॉरपोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-110 007

428

बूढ़ा जादूगर और पारस पत्थर

लेखक:- विजयकुमार वत्स
चित्रांकन:- भास्कर केवले

ओह! कृष्णा की तो नब्ज ही नहीं चल रही है। तो क्या कृष्णा मर गई?

राघव हतप्रभ-सा खड़ा रह गया।

पिताजी, तुम ऐसे क्यों खड़े हो? हमारी मां को क्या हुआ है? ये बोल क्यों नहीं रही हैं?

बेटा, तुम्हारी मां अब न तो कभी बोलेगी, और न ही कभी आंखें खोलेगी। तुम्हारी मां हमसे दूर, बहुत दूर चली गई है।
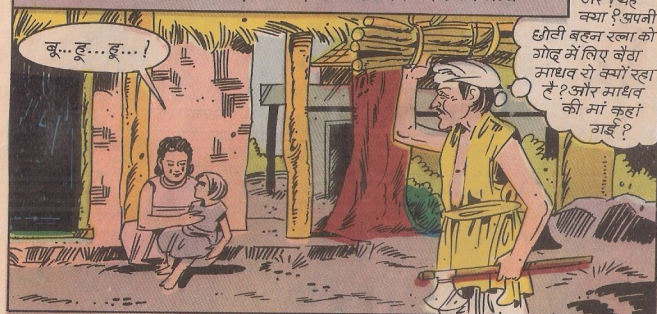
माधव की समझ में पिता की ये बातें नहीं आईं।

तब राघव ने कृष्णा की चिता बनाई और भरे हृदय से उसे अग्नि दिखाई।

कृष्णा, तुमने यह क्या किया? जीवन के इस कठिन सफर में मुझे अकेला क्यों छोड़ दिया। मेरा नहीं, तो कम से कम दोनों अबोध बच्चों का तो कुछ ख्याल किया होता। अब इनकी परवरिश कौन करेगा?

दिन छिपे लकड़ियों के गट्ठर के साथ जब वह घर वापस लौटता तो भूखा-प्यासा माधव उससे कहता—

पिताजी, बहुत भूख लगी है। रत्ना भी भूख से रो रही है।

बू...हू...हू..!

अभी लो मेरे बच्चो! मैं अभी तुम दोनों की भूख का इन्तजाम करता हूं।

राघव लकड़ियों का गट्ठर रखकर उसी समय बच्चों के लिए खाना बनाने में जुट जाता।

बच्चों को खाना खिला-पिलाकर जब वह रात को चारपाई पर लेटता तो थकान के कारण उसका अंग-अंग दर्द करता रहता।
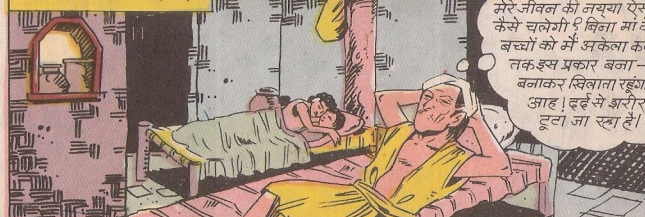
दिन-रात इसी प्रकार अथक परिश्रम करने के कारण उसका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। यह देखकर गांव वाले उसे समझाते —

राघव, ऐसा कब तक चलेगा। अगर तुम इसी प्रकार दिन-रात घर-बाहर के कामों में लगे रहे तो शीघ्र ही घातक रूप से बीमार पड़ जाओगे।

राघव, तुम दूसरा विवाह क्यों नहीं कर लेते?

राघव, दूसरा विवाह करने से कम से कम तुम्हारी बच्चों की परवरिश की चिंता तो दूर हो जायेगी।

नहीं, मैं दूसरी शादी कभी नहीं करूंगा। पता नहीं सौतेली मां आकर दोनों अबोध बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करे।

इस प्रकार उसके दिन बड़े ही संघर्षपूर्ण गुजर रहे थे। एक दिन जब वह शहर में लकड़ियां बेचकर घर वापस लौट रहा था —

बू...हू...हू...!

अरे! इस बियाबान जंगल में किसके रोने की आवाज आ रही है।

वह उस दिशा की ओर चल पड़ा, जिधर से रोने की आवाज आ रही थी।

कुछ दूर चलने के पश्चात उसे एक रोती हुई स्त्री दिखाई दी।

कौन है ये? इसे क्या दुःख है?

कौन हो तुम? और तुम क्यों रो रही हो?

मैं एक दुखियारी हूं। मेरा नाम वसुधा है। आज ही मेरा पति मर गया है। अब मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है। इसलिए मैं इस जंगल में आत्महत्या करने आई हूं। कोई भी जंगली जानवर यहां मुझे मारकर खा जायेगा।

ओह! तो यह स्त्री यहां प्राण गंवाने आयी है।

सहसा उसके दिमाग में एक विचार आया।

इस स्त्री का पति मर गया है। और मेरी पत्नी मर गयी है। हम दोनों ही इस समय दुखियारे हैं। क्यों न मैं इस दुखी स्त्री से विवाह कर लूं। ऐसा करने से इस स्त्री को भी सहारा मिल जायेगा और माधव व रत्ना को देखभाल करने वाली मां भी मिल जायेगी।

यह सोच राघव ने वसुधा से कहा —

वसुधा, तुम्हें प्राण खोने की कोई आवश्यकता नहीं है। आत्महत्या करना कायरता है। घबराओ नहीं, मैं तुम्हारा सहारा बनूंगा। मैं तुमसे विवाह करूंगा।

यह आप क्या कह रहे हैं?

मैं ठीक कह रहा हूं वसुधा! तुम्हारी तरह मैं भी अपनी पत्नी को खो चुका हूं।
कहकर राघव ने वसुधा को अपने बारे में पूर्ण जानकारी दी।

तत्पश्चात्—
वसुधा, अगर तुम मेरे साथ विवाह करने को तैयार हो जाओ तो मेरे अनाथ बच्चों का जीवन संवर सकता है। और तुम्हें भी जीने के लिए एक सहारा मिल सकता है।
राघव की सारी बातें सुनने के पश्चात वसुधा सोच में पड़ गई। फिर बोली—
मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है।
तो जल्दी से उठो और मेरे साथ चलो।
वसुधा तुरन्त उठकर राघव के साथ चल पड़ी।
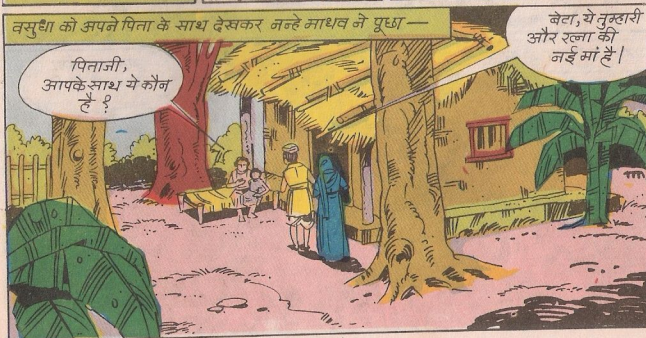
वसुधा को अपने पिता के साथ देखकर नन्हे माधव ने पूछा—
पिताजी, आपके साथ ये कौन है?
बेटा, ये तुम्हारी और रत्ना की नई मां है।

नई मां! पिताजी, नई मां क्या हमें पहले वाली मां की तरह ही प्यार करेगी?
हां बेटा, नई मां तुम्हें खूब प्यार करेगी। वह तुम्हारा और रत्ना का पूरी तरह ध्यान रखेगी।

अगले दिन ही गांव वालों की उपस्थिति में राघव ने वसुधा से विवाह कर लिया।
राघव ने दूसरा विवाह करके बहुत अच्छा किया।
अब राघव के दोनों बच्चों का लालन-पालन ठीक प्रकार से हो जायेगा।

राघव का उजड़ा हुआ घर पुनः बस गया था। वसुधा उसका और उसके दोनों बच्चों का पूरा ख्याल रखती थी।

धीरे-धीरे इसी प्रकार कई माह बीत गये। एक दिन वसुधा राघव से बोली—
सुनो जी, एक खुशखबरी है! मेरा पांव इन दिनों भारी है।
क्या SSS? तुम मां बनने वाली हो?
वसुधा से यह खबर पाकर राघव खुश हो गया।

उचित समय पर वसुधा ने एक पुत्री को जन्म दिया।

वसुधा अब सारा दिन नवजात कन्या के प्यार-दुलार में ही डूबी रहती।
उसने माधव और रत्ना का ख्याल रखना छोड़ दिया था।
पता नहीं नई मां को क्या हो गया है। जबसे नन्ही बहन पैदा हुई है, नई मां ने हमारा ख्याल रखना बिल्कुल ही छोड़ दिया है।
राघव भी वसुधा के बदले व्यवहार को देखकर परेशान था।

एक दिन शाम को जब राघव लकड़ी काटकर जंगल से वापस लौटा—
पिताजी, बहुत भूख लगी है।
पिताजी, मैं भी भूखी हूं।
तुम लोग भूखे हो! तुम्हारी मां कहां गई? क्या उसने तुम्हारे लिए खाना नहीं बनाया?

यह सुनते ही माधव रोने लगा।
बू...हू...हू...!
अरे! यह क्या बेटे? तुम तो मेरी बात सुनते ही रोने लगे। चुप हो जाओ और जल्दी से मुझे अपने रोने का कारण बताओ।
माधव ने आंसू पोंछते हुए कहा—
पिताजी, मैं और रत्ना आज सुबह से ही भूखे हैं। दोपहर को जब भूख सहन नहीं हुई तो मैंने और रत्ना ने नई मां से खाने को रोटी मांगी...
...नई मां ने हम दोनों को रोटी तो नहीं दी, बदले में हमारी खूब पिटाई की।
ओह, वसुधा ने ऐसा क्यों किया?
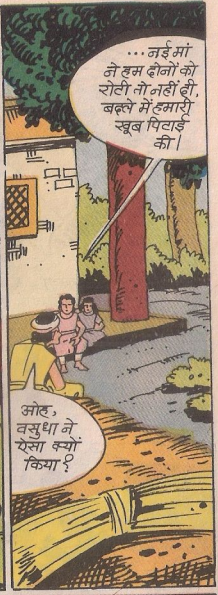
वह उसी समय माधव और रत्ना को लेकर वसुधा के पास पहुंचा।
वसुधा, ये दोनों बच्चे तुम्हारे बारे में जो कुछ भी कह रहे हैं, क्या वह सच है?

सुनते ही वसुधा भड़क उठी।

नासपीटो, अपने बाप को घर में घुसने से पहले ही सिखा-पढ़ा दिया।

वसुधा, इन मासूम बच्चों पर चिल्लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने तुमसे जो प्रश्न किया है, उसका जवाब दो।

तो सुनो, तुम्हारे मासूम बच्चे जो कुछ भी कह रहे हैं; वह सही है।

तो क्या सचमुच तुमने इन दोनों को मारा था?

हां, मारा था! ये दोनों हर समय खाना मांगते रहते हैं। जैसे खाना बनाने के लिए इनके बाप ने मेरे पास कोई नौकर रख छोड़ा हो।

वसुधा, ऐसा न कहो। दीपा की तरह से दोनों भी तो तुम्हारे ही बच्चे हैं।

हुंह! ये मेरे बच्चे अवश्य हैं! लेकिन सगे नहीं, सौतेले।

ओह! तो अब तुम्हारे दिमाग में सगे-सौतेले का भूत समा गया है।

राघव के जाने के बाद वसुधा खाना बनाने में जुट गई। जैसे ही वह खाना बनाकर निबटी, उसकी लड़की दीपा ने आकर कहा —

मां, पास ही के बाग से मैं फूल तोड़कर लाना चाहती हूं।

तो इसमें पूछने की क्या बात है बेटी। जाओ, शौक से जाओ।

दीपा उछलती-कूदती फूल तोड़ने चली गई।

तब वसुधा ने खाने को एक पोटली में बांधा और माधव से बोली —

तुम्हारे पिताजी जंगल में लकड़ियां काटने गये हैं। जाओ, यह खाने की पोटली उन्हें दे आओ।

मां, जंगल में तो खूंखार जानवर रहते हैं। मैं जंगल में नहीं जाऊंगा। मुझे डर लगता है।

पन्द्रह साल का धींगड़ा हो गया है रे तू, और अभी तक जानवरों से डरता है। जा, अकेले जाते डर लगता है तो रत्ना को भी साथ ले जा।

क्या ऽऽऽ? आप रत्ना को भी जंगल में भेजना चाहती हैं।

क्यों? रत्ना जंगल में चली जायेगी तो क्या गजब हो जायेगा। अरे नासपीटो, दिनभर तुम बकर-बकर खाते रहते हो। आज थोड़ा-सा काम बता दिया तो तुम्हारी नानी मर गई। जाओ, अपने पिता का खाना ले जाओ, वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।

वसुधा की धमकी सुनकर माधव और रत्ना सिहर गये।

रत्ना ने चुपचाप वसुधा से खाने की पोटली ले ली तो माधव रत्ना का हाथ पकड़कर घर से निकल आया। वह मन ही मन बुदबुदा रहा था।

भगवान, मेरी और रत्ना की जंगली जानवरों से रक्षा करना।

जैसे ही वे दोनों गांव के बाहर वाले बाग के समीप से गुजरे, दीपा बाग में से निकलकर उनसे बोली —

कहां जा रहे हो तुम दोनों?

हम पिताजी का खाना लेकर जंगल में जा रहे हैं।

सुनकर दीपा ने कुछ सोचकर उन दोनों से कहा —

पिताजी का खाना तुम नहीं, मैं ले जाऊंगी।

क्या ऽऽऽ?

हां, मैं ही खाना लेकर जाऊंगी।

लेकिन दीपा बहन, जंगल में तो शेर-चीते होते हैं। वहां जाना खतरे से खाली नहीं है।

मैं शेर-चीतों से नहीं डरती।
दीपा ने ज़िद करके रत्ना से खाने की पोटली ले ली....
...और जंगल की ओर चल दी।
अब क्या होगा भइया?
रत्ना, दीपा बड़ी ज़िद्दी लड़की है। अगर हम उसका कहना नहीं मानते तो वह मां से हमारी शिकायत कर देती। अब तो यही ठीक रहेगा, हम यहीं बैठकर दीपा के जंगल से वापस लौटने की प्रतीक्षा करें।
अतः वे दोनों बाग के बाहर ही बैठ गये।
दूसरी ओर दीपा अपनी मस्ती में जंगल में बढ़ी चली जा रही थी।
पिताजी जब मुझे देखेंगे तो बहुत खुश होंगे। कहेंगे, आज रानी बेटी दीपा हमारा खाना लायी है।
दीपा जंगल में पहली बार आई थी। इसलिए वह जंगल के रास्तों से परिचित नहीं थी।
जल्दी ही वह जंगल में भटक गई। धीरे-धीरे दोपहर हो गई, लेकिन वह अपने पिता राघव को नहीं ढूंढ़ पायी। यह देखकर वह चौंकी।
ओह! लगता है, मैं रास्ता भटक गई हूं।
दूसरी ओर जंगल में राघव भूख से व्याकुल होकर सोच रहा था—
क्या बात है, वसुधा अभी तक खाना लेकर क्यों नहीं पहुंची।
इधर बाग के बाहर बैठे माधव व रत्ना भी परेशान थे।
बहुत देर हो गई। दीपा को अब तक तो जंगल से लौटकर आ जाना चाहिए था।
कहीं वह किसी संकट में तो नहीं फंस गई भइया?
रत्ना, हमें जंगल में चलकर दीपा को खोजना चाहिए। अगर दीपा को कुछ हो गया तो नई मां हमें ज़िंदा नहीं छोड़ेगी।
तो भइया, देर न करो। और जल्दी से दीपा को खोजने चलो।
अतः माधव और रत्ना जल्दी से जंगल की ओर चल पड़े।
इधर जंगल में भटकी दीपा को अब डर लगने लगा था। वह भयभीत-सी जंगल में बढ़ी चली जा रही थी। तभी उसे जंगल में एक मकान दिखाई दिया।
मुझे इस मकान में जाकर मकान के गृहस्वामी से मदद मांगनी चाहिए। वह ज़रूर जंगल का रास्ता जानता होगा।
यह सोचकर वह उस मकान की ओर चल दी।

वहां पहुंचकर उसने द्वार पर दस्तक दी।
ठक..ठक.
प्रत्युत्तर में अन्दर से आवाज आई।
दरवाजा खुला है, दरवाजे को धकेलकर अन्दर आ जाओ।
दीपा ने झिझकते हुए दरवाजा खोलकर घर के अन्दर प्रवेश किया।
मकान के अन्दर उसे एक बूढ़ा मिला।
कौन हो तुम?
मैं जंगल में रास्ता भूल गई हूं। क्या आप मुझे जंगल का रास्ता बताने की कृपा करेंगे।
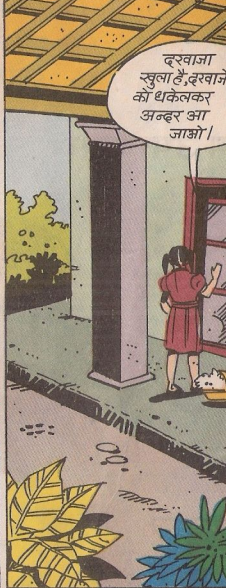
क्यों नहीं, लेकिन पहले तुम्हें झाड़ू से मेरे घर की सफाई करनी होगी। तभी मैं तुम्हें जंगल का रास्ता बताऊंगा।
ठीक है। पहले मैं आपके घर की सफाई किये देती हूं।
दीपा झाड़ू लेकर घर की सफाई में जुट गई।
एक कमरे में ही झाड़ू लगाने के पश्चात् वह थक गई।
जैसे ही वह झाड़ू लगाने दूसरे कमरे में पहुंची।
भूख के मारे बुरा हाल हो रहा है। पहले पोटली का खाना खा लूं। तभी झाड़ू लगाऊंगी।
दीपा ने तुरन्त ही पोटली खोली और खाना खाने बैठ गई।
बूढ़े ने भी मुझे कितना खराब काम करने को कहा है। मैंने तो कभी अपने घर में भी झाड़ू नहीं लगाई।

खाना खाकर उसने झाड़ू एक कोने में रखी और वापस बूढ़े के पास पहुंची।

बूढ़े बाबा, मैंने सारे मकान में झाड़ू लगा दी है। अब आप मुझे जल्दी से जंगल का रास्ता बता दीजिए।

दीपा की बात सुनकर बूढ़ा क्रोध से भभक उठा।

झूठी लड़की, मुझसे झूठ बोलती है। जा, इसी समय मुर्गी बन जा।

अगले ही पल दीपा मुर्गी बन गई।

कुकड़ूं... कूं...।
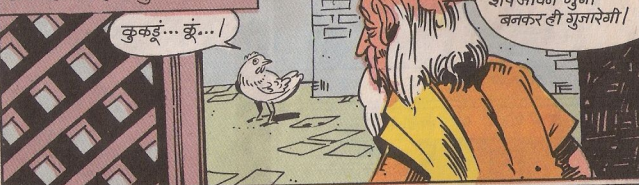
नादान लड़की, अब तू शेष जीवन मुर्गी बनकर ही गुजारेगी।

दूसरी ओर माधव और रत्ना भी दीपा की खोज करते हुए उसी मकान के बाहर आ पहुंचे, जिसमें दीपा गई थी।

ठक... ठक...

जो भी है, दरवाजे को ठेलकर अन्दर चले आओ।

तब दोनों दरवाजा ठेलकर बूढ़े के पास पहुंचे।

बाबा, इस जंगल में हमारी छोटी बहन दीपा खो गई है। क्या आप उसे ढूंढ़ने में हमारी सहायता कर सकते हैं?

बेटा, मैं तुम्हारी बहन को खोजने में तुम्हारी सहायता अवश्य करूंगा। लेकिन पहले तुम्हें मेरा एक काम करना होगा।
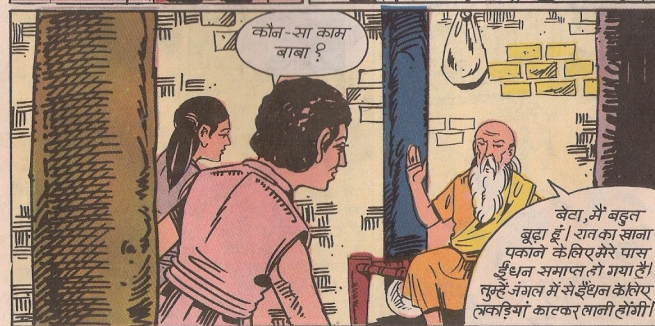
कौन-सा काम बाबा?

बेटा, मैं बहुत बूढ़ा हूं। रात का खाना पकाने के लिए मेरे पास ईंधन समाप्त हो गया है। तुम्हें जंगल में से ईंधन के लिए लकड़ियां काटकर लानी होंगी।

क्या कहा! तुमने उन छोटे बच्चों को उस भयानक जंगल में भेजा था। लेकिन वे तो मेरे पास खाना लेकर नहीं पहुंचे।

लगता है, माधव व रत्ना को जंगल में जंगली जानवर चीर-फाड़कर खा गये हैं। तभी तो वे जंगल से वापस नहीं लौटे हैं?

यह सोचकर वसुधा खुश हो उठी।

अगले ही पल उसके दिमाग में एक विचार आया।

लेकिन दीपा बेटी कहां चली गई? वह भी तो सुबह से ही घर वापस नहीं लौटी है।

वसुधा सोच में पड़ गई।

तब राघव वसुधा से बोला—

वसुधा, आज तुमने उन दोनों मासूम बच्चों को जंगल में भेजकर अपने मन की मुराद आखिर पूरी कर ही ली। अब तक तो उन्हें जंगली जानवर खा गये होंगे।
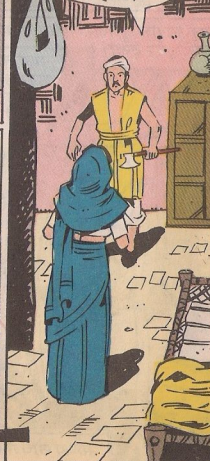
वह उल्टे पांव ही वापस जाने लगा तो वसुधा ने कहा—
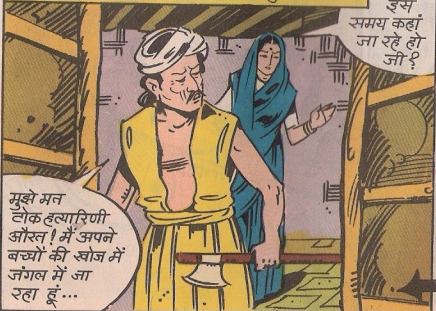
इस समय कहां जा रहे हो जी?

मुझे मत टोक हत्यारिणी औरत! मैं अपने बच्चों की खोज में जंगल में जा रहा हूं...

...जंगल में वे मुझे जीवित तो नहीं मिलेंगे, पर उनके अवशेष तो मिलेंगे ही। उनके अवशेषों को इकट्ठा करके मैं उनका अन्तिम संस्कार करूंगा।
कहकर राघव तेजी से घर से बाहर निकल गया और जंगल की ओर चल पड़ा।
दूसरी ओर माधव जैसे ही एक पेड़ के पास से गुजरा, एक आवाज आई—
मुझे बाहर निकालो... मुझे बाहर निकालो।

यह आवाज सुनकर माधव चौंका। उसने चारों ओर देखा।
यहां तो कोई नजर नहीं आ रहा है, फिर यह आवाज कहां से आई थी?
तभी आवाज पुनः आई।
भाई, सोच में मत पड़ो। तुम्हारे पास वाले पेड़ के नीचे एक बन्द बोतल पड़ी है। मैं उसी बोतल में बन्द हूं। कृपया करके मुझे बोतल से बाहर निकाल दो।
माधव सोच में पड़ गया।

यह सुनकर माधव चौंका और पेड़ के पास पड़ी बोतल को ध्यान से देखा।
ओह, इस बोतल में तो कोई नन्हा-सा आदमी बन्द है। यह आदमी इस बोतल में कैसे आया? मुझे इसको बोतल खोलकर निकाल देना चाहिए।
यह सोचकर उसने बोतल की डाट हटाई।
शाय
हैं! यह क्या?
अगले पल—
हा-हा-हा! जानते हो बालक, तुमने मुझे बोतल से निकाला, इसके बदले में मैं तुम्हें क्या इनाम दूंगा।
नहीं।
तो सुनो, मैंने सोच रखा था कि जो भी मुझे इस बोतल में से निकालेगा, मैं उसे खा जाऊंगा।
क्या sss?

हां बच्चे, अब तुम जल्दी से मरने के लिये तैयार हो जाओ।

मुझे जल्दी ही कोई उपाय करना चाहिए, वरना यह जिन्न सचमुच ही मुझे मारकर खा जायेगा।

ठीक है, अगर तुम इस बोतल में पुनः घुसकर दिखा दो तो मैं तुम्हारी बात मान जाऊंगा।

हा-हा-हा-! अरे बालक, यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है। मैं तुम्हें अभी बोतल के अन्दर जाकर दिखाता हूं।

यह सोचकर माधव ने जिन्न से कहा—

जिन्न भाई, तुम झूठ बोल रहे हो। तुम इस बोतल में थोड़े ही कैद थे। तुम इतने विशालकाय शरीर के हो। भला इस छोटी-सी बोतल में कैसे आ सकते हो?

मैं ठीक कह रहा हूं बच्चे।

कहकर जिन्न बोतल में घुस गया।

शाय

बन गया काम!

जिन्न के बोतल में घुसते ही माधव ने झटपट बोतल की डाट लगा दी।

यह देखकर बोतल में बन्द जिन्न चिल्लाया—

अरे! यह क्या किया? जल्दी से डाट खोलकर मुझे बाहर निकालो।

ताकि बोतल से बाहर आकर तुम मुझे खा सको।

मुझे माफ कर दो भाई, अब मैं तुम्हें नहीं खाऊंगा। मुझे जल्दी से बाहर निकाल दो।

नहीं, अब मैं तुम्हें बाहर कभी नहीं निकालूंगा।

मुझ पर एतबार करो भाई, मैं तुम्हें बहुत सारी धन-दौलत दूंगा।

मुझे नहीं चाहिए तुम्हारी दौलत।

तो क्या तुम बूढ़े जादूगर की कैद से अपनी बहन दीपा व रत्ना को भी नहीं छुड़वाना चाहते हो।

यह तुम क्या कह रहे हो जिन्न! मेरी बहन जादूगर की कैद में है?

मैं ठीक कह रहा हूं माधव! तुम जिस बूढ़े के पास अपनी बहन रत्ना को छोड़ आये हो, वह एक जादूगर है। वह लड़कियों को मुर्गी बना-बनाकर उन्हें भूनकर खाता है।

क्याऽऽऽ?

माधव, तुम्हारी सौतेली बहन दीपा भी उसी के कब्जे में है। उसको भी बूढ़े ने मुर्गी बना दिया है। और तो और, तुम्हारे वहां से आते ही बूढ़े ने तुम्हारी बहन रत्ना को भी मुर्गी बना दिया है।

ओह!

माधव, सोच लो। यदि तुम मुझे इस बोतल से पुनः निकाल दोगे तो मैं उस बूढ़े जादूगर की कैद से तुम्हारी दोनों बहनों को छुड़वा सकता हूं।

तब तो मैं अभी तुम्हें बोतल से बाहर निकालना हूं।
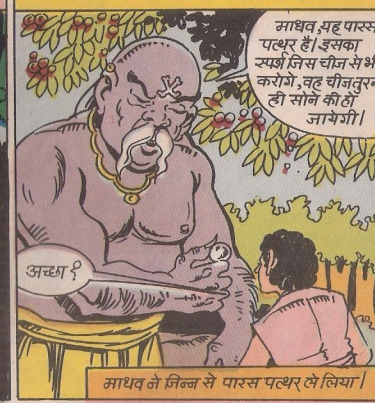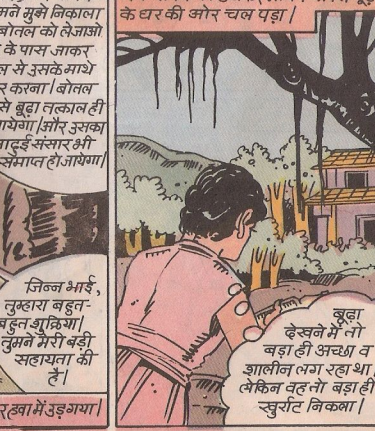
माधव जल्दी ही बूढ़े के पास जा पहुंचा।

क्या तुम लकड़ियां ले आये?

मैं क्या तुम्हारा नौकर हूं, जो तुम्हारे लिए लकड़ियां काटकर लाता?

क्या बक रहा है तू छोकरे! तू मुझे जानता नहीं मैं कौन हूं।

मैं तुझे अच्छी तरह जानता हूं पाजी!

माधव ने शीघ्रता से आगे बढ़कर बूढ़े के माथे पर बोतल का प्रहार किया।

आह!

अगले ही पल —

ओह, यह क्या हुआ? सारे में धुआं ही धुआं फैल गया।

जब धुआं छंटा तो रत्ना और दीपा उसके सामने खड़ी थीं।

दीपा, रत्ना, तुम!

हां भइया, हम दोनों को उस बूढ़े ने जादू से मुर्गियां बना दिया था। उस बूढ़े के मरते ही...

...उसका जादू समाप्त हो गया और हम दोनों अपने असली रूप में आ गयीं।

ओह! यह तो बड़ी अच्छी बात हुई।

माधव उसी समय रत्ना व दीपा को साथ लेकर वहां से चल पड़ा।

पिताजी हमारे बारे में चिंतित हो रहे होंगे।

अभी वे कुछ ही दूर पहुंचे थे कि —

पिताजी, आप?

मेरे बच्चो, मैं तुम्हें ही खोजने आया हूं। तुम्हें सकुशल देखकर मुझे चैन की सांस आई है।

पिताजी, आज अगर माधव भइया हमें बूढ़े जादूगर से न बचाते तो मुझे और रत्ना को वह बूढ़ा जादूगर भूनकर खा जाता।

कौन बूढ़ा जादूगर?

तब माधव ने विस्तारपूर्वक राघव को बूढ़े जादूगर के बारे में बताया।

सारी बात जानकर राघव ने तीनों को अपनी छाती से लगा लिया।

ओह मेरे बच्चो! तुम ऐसे घोर संकट में फंस गये थे।

तत्पश्चात् वह तीनों से बोला —

चलो बच्चो, रात बहुत हो गयी है। अब घर चलें।

तब वे इकट्ठे घर की ओर चल पड़े।

घर जाकर राघव ने वसुधा को विस्तारपूर्वक सारी बात बताते हुए कहा —

वसुधा, जिस माधव से तुम घृणा करती थी, उसी माधव ने तुम्हारी दीपा को नया जीवनदान दिया है।

मुझे क्षमा करें स्वामी! मैंने माधव व रत्ना को अपने न समझकर बहुत भारी भूल की है।

दूसरे दिन जब राघव कुल्हाड़ी लेकर जंगल में लकड़ियां काटने के लिये चलने लगा तो माधव उससे बोला —

पिताजी, अब आपको लकड़ियां काटने के लिये जंगल में जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे पास यह पारस पत्थर है, इसके कारण हम जल्दी ही धनवान हो जायेंगे।

पारस पत्थर, और तुम्हारे पास?

तब माधव ने पारस पत्थर को राघव की कुल्हाड़ी से छुआ दिया।

अरे! कुल्हाड़ी तो सोने की हो गई?

यही तो इस पत्थर का कमाल है पिताजी!

सचमुच ही पारस पत्थर के कारण वे लोग शीघ्र ही धनवान हो गये। तब राघव सुखपूर्वक परिवार के साथ रहने लगा।

समाप्त